Scanned with CamScanner

बागवानी

भूमिका :-

स्वस्थ्य जीवन के लिए भोजन, वस्त्र, घर जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं के साथ - साथ सुन्दर एवं स्वच्छ वातावरण भी आवश्यक है। धरती की सुन्दरता और प्राकृतिक सन्तुलन का ध्यान रखना हमारा कर्तव्य है। विश्व एक सुन्दर फुलवारी है और मनुष्य उसका सर्वोत्कृष्ट पुष्प है।

हमारे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में दो प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होती है -

1. सैद्धान्तिक शिक्षा
2. व्यवहारिक शिक्षा

सैद्धांतिक शिक्षा विद्यार्थियों को कक्षा में पुस्तकों की सहायता से दी जाती है। व्यावहारिक शिक्षा व्यवहारिक तरिकों जैसे - बागवानी, खेल आदि द्वारा दी जाती है। व्यवहारिक शिक्षा अधूरा है और किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए सैद्धांतिक के साथ - साथ व्यवहारिक शिक्षा भी अति आवश्यक है।

बागवानी को बी.एड. के पाठ्यक्रम में डालने का उद्देश्य भावी शिक्षकों को बागवानी

Scanned with CamScanner

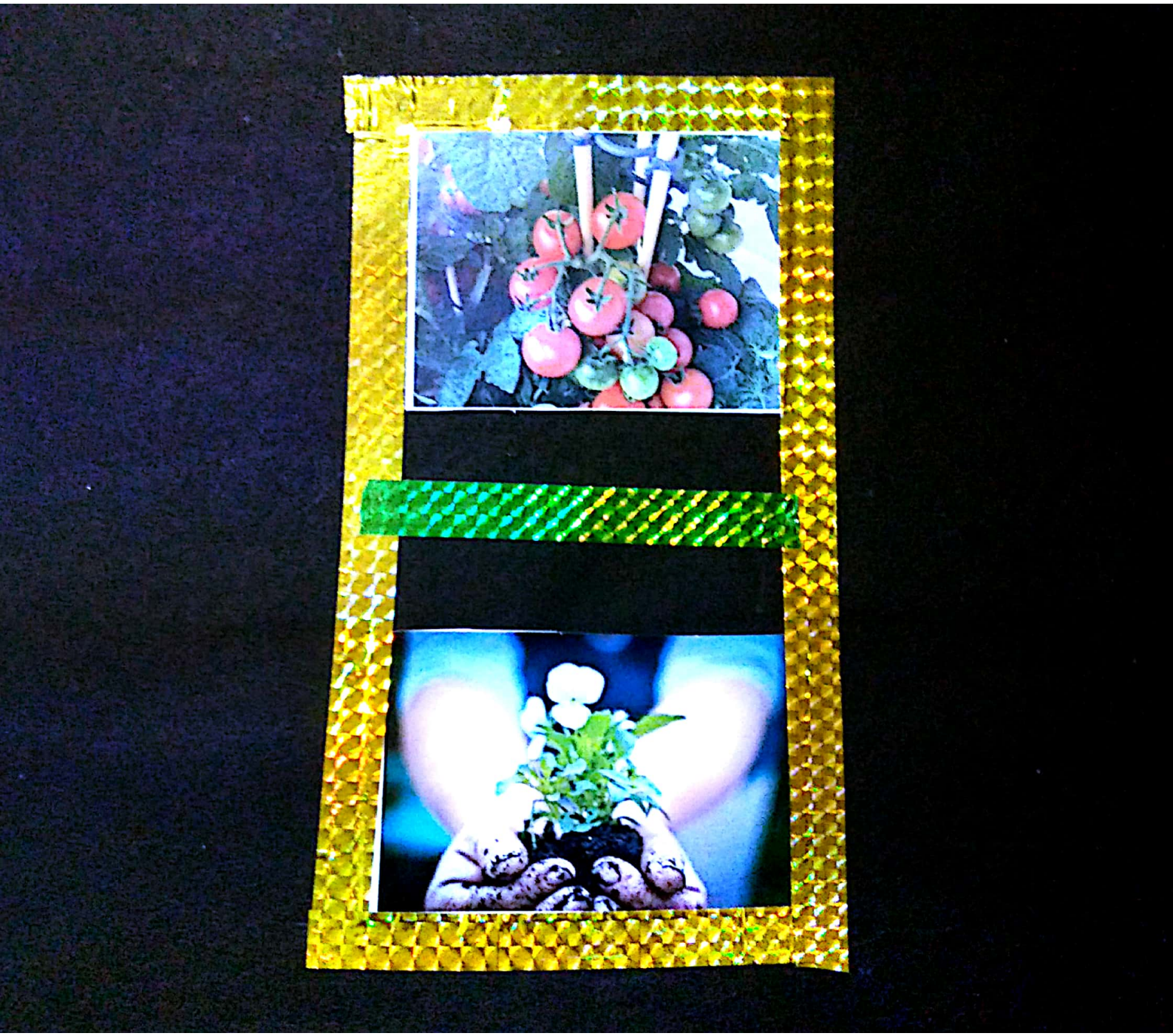

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के द्वारा व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करना है। चूँकि शिक्षक राष्ट्रनिर्माता होते हैं तथा उनके द्वारा कई लोगों को तथा कई नई पीढ़ियों का सर्वांगीण विकास होता है, इसलिए उनको सभी प्रकार की जानकारियों से अवगत होना आवश्यक होता है।

बागवानी सर्वत्र विविधता को बढ़ावा देता है। औषधियुक्त पौधों को हर-हर तक पहुँचा कर लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। तथा किचन बागवानी के माध्यम से लोगों को घर में ही सब्जी तथा मसालों आदि की प्राप्ति हो जाती है। बागवानी के द्वारा हमें आर्थिक रूप से भी लाभ प्राप्त होता है। आज के अत्याधुनिक शहरी जीवन शैली में बागवानी का महत्व बहुत बढ़ गया है। क्योंकि बागवानी के द्वारा वातावरण से हमें शुद्ध प्राण वायु प्राप्त होता है तथा चारों ओर हरियाली छा जाती है।

हमारे राज्य झारखण्ड में प्राकृतिक पर्वों जैसे - सरहुल, करमा, जितिया इत्यादि की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि इन पर्वों के माध्यम से हमलोग प्रकृति प्रेमी बनते हैं तथा प्रकृति के देख-रेख में अपना सहयोग प्रदान करते हैं।

Scanned with CamScanner